

B.A - I, History (Hon's) & Inter (+2) Students.

* प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत में पुरातात्विक अवशेषों का विवेचन करें।

उत्तर- प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन में पुरातात्विक स्रोतों का महत्वपूर्ण स्थान है। यह माध्यम अत्यन्त प्रामाणिक हैं तथा इसके माध्यम से इतिहास के अनेक खम्भे एवं युगों की जानकारी प्राप्त होती है। इसके अंतर्गत तीन साक्ष्य महत्वपूर्ण रूप से आते हैं - अभिलेखीय, मुद्रा संबंधी रूप स्मारक संबंधी। प्राचीन इतिहास के पुनर्निर्माण में अभिलेखों का ऐतिहासिक महत्व साहित्यिक साक्ष्यों से अधिक है। सबसे प्राचीन अभिलेख बौजजर्कई से त्रहर्षके की लिपि शीत करने में सहायता मिलती है। अशोक के शिलालेख व लंघ लेखों से उसके साम्राज्य की सीमा, उसके धर्म व शासन नीति पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। अनेक प्रशस्तियाँ मिली हैं जिनसे संबंधित शासकों के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इनमें मुख्य हैं, गुप्तसम्राट समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तंभ लेख, सप्तवाहन खालि युधुमायि अथवा नासिक गुहालेख, खारवेल का हाथीगुफा अभिलेख, शकसत्रप रुद्रगमन का जुनागढ़ अभिलेख, यशोवर्धन का मंदलौर अभिलेख, पुल-केशिन द्वितीय का रैलेल अभिलेख। प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त की विजयों का वर्णन है। वहीं रैलेल में तर्क पुलकेशिन युद्ध का विवरण है। पूर्व मध्यकाल के अनेक श्रमि अनुदान पत्र मिलते हैं जिनसे प्रशासन के सामंती स्वरूप की सूचना मिलती है। सिक्कों से भी ऐतिहासिक सामग्री मिलती है। 200 ई. पू. से 300 ई. तक के भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें मुख्यतः मुद्राओं की सहायता से प्राप्त है। मुद्राओं से तत्कालीन आर्थिक दशा या संबंधित राजाओं की साम्राज्य सीमा या भी ज्ञान होता है। सिक्कों की बहुलता व्यापार-वाणिज्य के विकास का कभी अवन्ती अवन्ति या सूचक है।

कुछ कुम्हारों से स्तम्भों के बने व उनके व्यक्तिगत गुणों का फल
लगता है जैसे क्विण्ड व समुद्रगुप्त की मुद्राओं से भारत के इण्डो-
यूरोपिया शासकों के कार्य में हम जानकारी मिलती है।

प्राचीन इमारतों, मंदिरों व मूर्तियों से विभिन्न कुम्हारों की
सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक परिस्थितियों का बोध होता है। मंदिर,
विवारों तथा स्तूपों से जनता की आध्यात्मिकता का व बहिष्कार का
फल चला है। विभिन्न स्थानों से प्राप्त सामग्रियों से प्राचीन इतिहास
के विभिन्न पहलुओं पर सुन्दर प्रकाश पड़ता है।